'वृश्चिक लग्न'

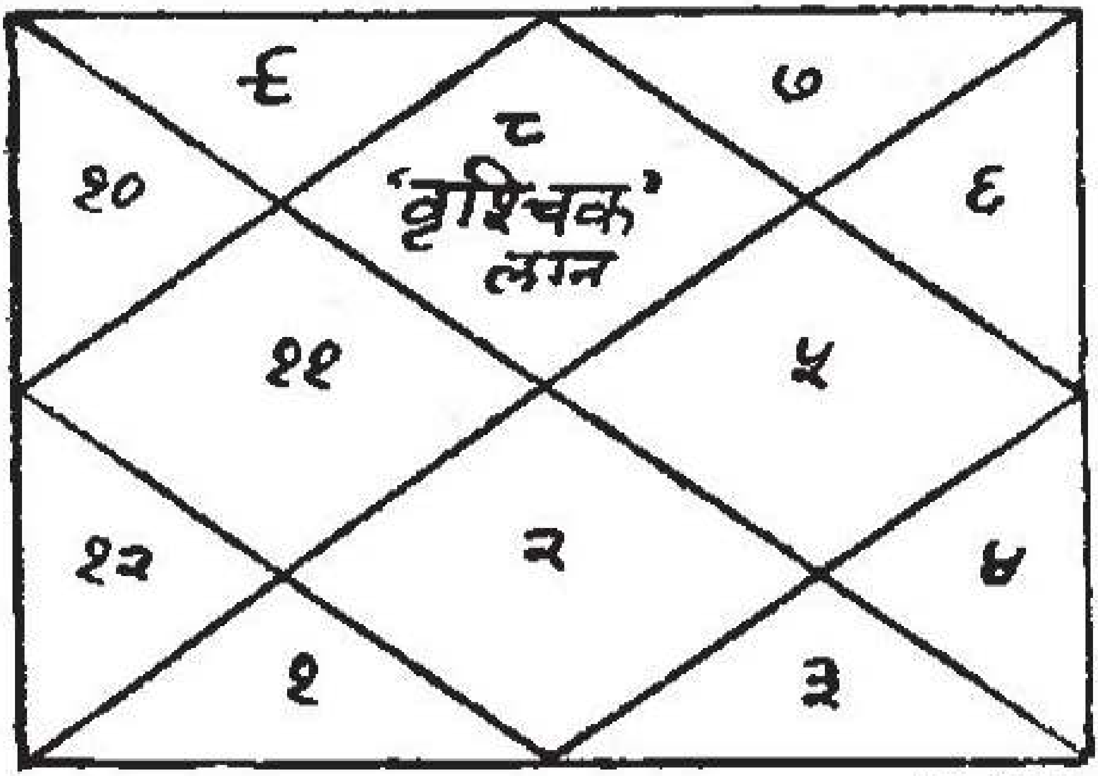

['वृश्चिक' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'वृश्चिक' लग्न का फलादेश

'वृश्चिक' लग्न में जन्म लेने वाला जातक ठिगने तथा स्थूल शरीर का होता है। उसकी आँखें गोल तथा छाती चौड़ी होती है। ऐसा व्यक्ति क्रोधी, पाखण्डी, मिथ्यावादी, तमोगुणी, कपटी, कड़वे स्वभाव का, पर-निन्दक, दयाहीन, भिक्षा-वृत्ति करने वाला, भाइयों से द्वेष रखने वाला, शत्रु-नाशक तथा सेवा-कर्म करने वाला होता है। परन्तु इसके साथ ही वह शास्त्रज्ञ, विद्या के आधिक्य से युक्त, गुणी, शूरवीर, अत्यन्त विचारशील तथा ज्योतिषी भी होता है। दूसरों के मन की बात जान लेने में वह बड़ा निपुण होता है।

'वृश्चिक' लग्न में जन्म लेने वाला जातक अपनी प्रारंभिक अवस्था में दुःखी रहता है तथा मध्यमावस्था में सुख भोगता है। २० से २४ वर्ष की आयु के बीच उसका भाग्योदय होता है।

वृश्चिक लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ८७९ के ९८६ के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें—इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

●

'वृश्चिक' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१. 'वृश्चिक' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८७९ से ८९० के बीच देखना चाहिए।

२. 'वृश्चिक' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'सूर्य'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ८७९
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ८८०
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ८८१
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ८८२
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ८८३
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ८८४
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८८५
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८८६
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८८७
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ८८८
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ८८९
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ८९०

'वृश्चिक' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१. 'वृश्चिक' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ८९१ से ९०२ के बीच देखना चाहिए।

२. 'वृश्चिक' लग्न वालों की गोचरकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन 'चन्द्रमा'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ८९१
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ८९२
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ८९३
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ८९४
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ८९५
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ८९६
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ८९७
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ८९८
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ८९९
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ९००
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ९०१
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ९०२

'वृश्चिक' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१. 'वृश्चिक' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित मंगल का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९०३ से ९१४ के बीच देखना चाहिए।

२. 'वृश्चिक' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित मंगल का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मंगल'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ९०३
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ९०४
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ९०५
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ९०६
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ९०७
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ९०८
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ९०९

(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६१०
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६११
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६१२
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६१३
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६१४

'वृश्चिक' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१. 'वृश्चिक' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६१५ से ६२६ के बीच देखना चाहिए।

२. 'वृश्चिक' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'बुध'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६१५
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६१६
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६१७
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६१८
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६१९
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६२०
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६२१
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६२२
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६२३
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६२४
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६२५
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६२६

'वृश्चिक' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१. 'वृश्चिक' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६२७ से ६३८ के बीच देखना चाहिए।

२. 'वृश्चिक' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'गुरु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६२७
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६२८

(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६२६
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६३०
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६३१
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६३२
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६३३
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६३४
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६३५
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६३६
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६३७
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६३८

'वृश्चिक' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१. 'वृश्चिक' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६३९ से ६५० के बीच देखना चाहिए।

२. 'वृश्चिक' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६३९
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६४०
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६४१
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६४२
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६४३
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६४४
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६४५
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६४६
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६४७
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६४८
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६४९
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६५०

'वृश्चिक' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१. 'वृश्चिक' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६५१ से ६६२ के बीच देखना चाहिए।

२. 'वृश्चिक' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावोंमें स्थित 'शनि' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'शनि'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ९५१
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ९५२
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ९५३
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ९५४
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ९५५
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ९५६
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ९५७
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ९५८
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ९५९
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ९६०
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ९६१
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ९६२

'वृश्चिक' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१. 'वृश्चिक' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९६३ से ९७४ के बीच देखना चाहिए।

२. 'वृश्चिक' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावोंमें स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ९६३
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ९६४
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ९६५
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ९६६
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ९६७
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ९६८
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ९६९
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ९७०
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ९७१
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ९७२
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ९७३
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ९७४

'वृश्चिक' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१. 'वृश्चिक' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९७५ से ९८६ के बीच देखना चाहिए।

२. 'वृश्चिक' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'केतु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ९७५
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ९७६
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ९७७
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ९७८
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ९७९
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ९८०
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ९८१
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ९८२
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ९८३
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ९८४
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ९८५
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ९८६

'वृश्चिक' लग्न में 'सूर्य'

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : प्रथमभाव : सूर्य

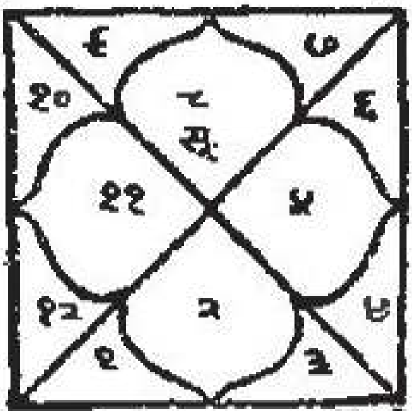

९८७

शरीर-स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक सौन्दर्य से युक्त, हृष्ट-पुष्ट, आत्माभिमानी, क्रोधी, प्रभावशाली और दबंग होता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय-पक्ष से जातक को सुख, सहयोग और सम्मान प्राप्त होता है। वह सुन्दर वस्त्रों तथा आभूषणों का शौकीन और यशस्वी होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की राशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री से वैमनस्य रहता है तथा दैनिक व्यवसाय में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : द्वितीयभाव : सूर्य

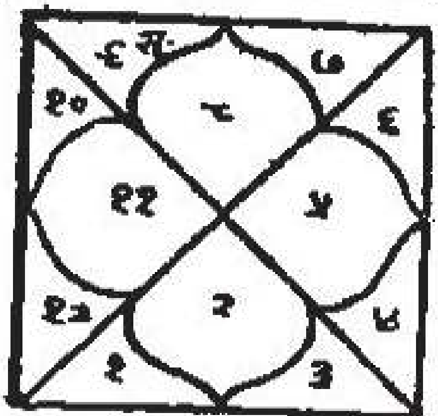

८८०

दूसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को पितृपक्ष से धन की प्राप्ति होती है तथा कौटुम्बिक सुख भी मिलता है। राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी लाभ होता है, परन्तु पिता के सुख में कुछ कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति भी प्राप्त होती है। ऐसे व्यक्ति का दैनिक जीवन सुखी तथा प्रभाव-पूर्ण बना रहता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : तृतीयभाव : सूर्य

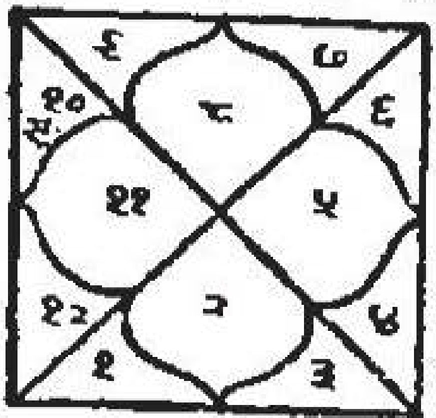

८८१

तीसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ प्राप्त होती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति तेजस्वी तथा पुरुषार्थी होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : चतुर्थभाव : सूर्य

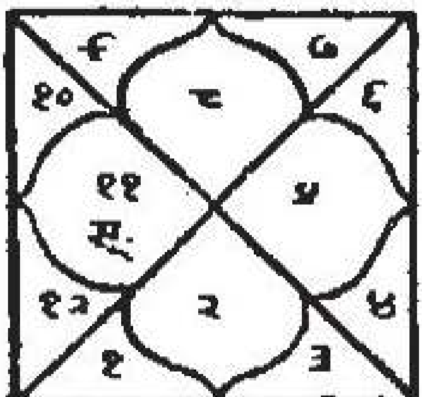

८८२

चौथे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक का अपनी माता के साथ मतभेद रहता है तथा भूमि-भवन के सुख में कुछ कमी आती है। घरेलू सुख में भी कुछ त्रुटियाँ बनी रहती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में दशम भाव को देखने से राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग सम्मान, लाभ तथा सफलता की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति स्वयं उन्नति करता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली से 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : पंचमभाव : सूर्य

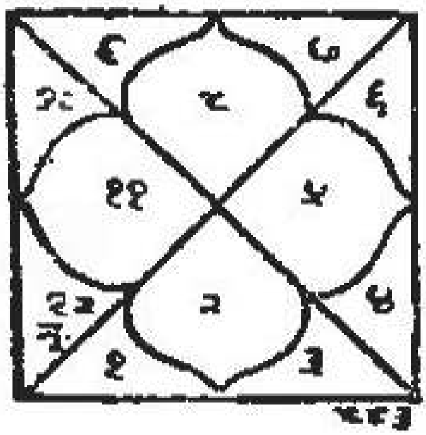

पाँचवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है। राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सम्मान, सहयोग एवं लाभ मिलता है। राजनीतिक क्षेत्र में उन्नति मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से लाभ के श्रेष्ठ साधन प्राप्त होते हैं। ऐसा व्यक्ति उच्च कोटि का जीवन बिताता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : षष्ठभाव : सूर्य

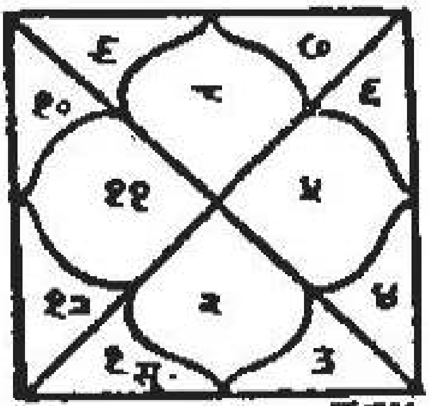

छठे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है। राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है, परन्तु माता एवं पिता से कुछ मतभेद बना रहता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च के मामले में कठिनाइयाँ बनी रहती हैं तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी परेशानी देता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : सप्तमभाव : सूर्य

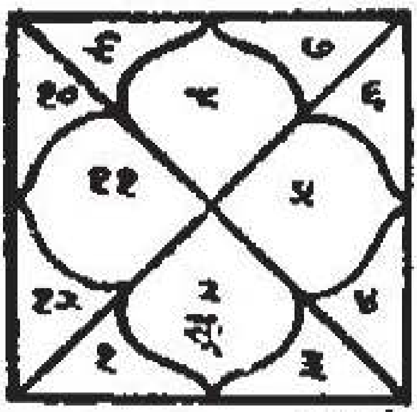

सातवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से संतोष एवं शक्ति की प्राप्ति होती है तथा दैनिक व्यवसाय में भी सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से जातक का शरीर सुन्दर तथा व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है। ऐसा व्यक्ति प्रभावशाली, त्यागी तथा उन्नतिशील होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : अष्टमभाव : सूर्य

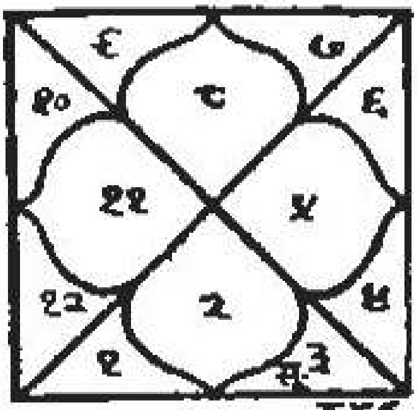

२८६

आठवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व में वृद्धि होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, धन एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से परिश्रम द्वारा धन की पर्याप्त वृद्धि होती है तथा कौटुम्बिक सुख भी प्राप्त होता है। बाहरी स्थानों से भी सम्बन्ध जुड़ता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : नवमभाव : सूर्य

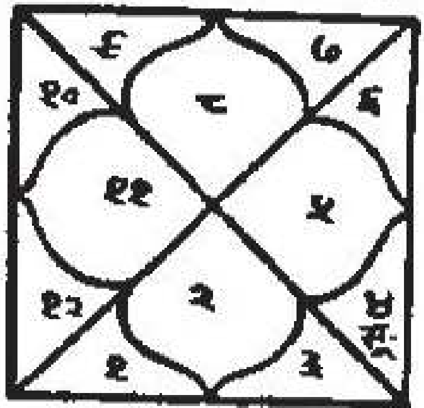

२८७

नवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के धर्म तथा भाग्य की उन्नति होती है एवं पिता, राज्य और व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों मतभेद रहता है तथा पराक्रम में सामान्य वृद्धि होती है।

संक्षेप में, ऐसा व्यक्ति सुखी जीवन बिताता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : दशमभाव : सूर्य

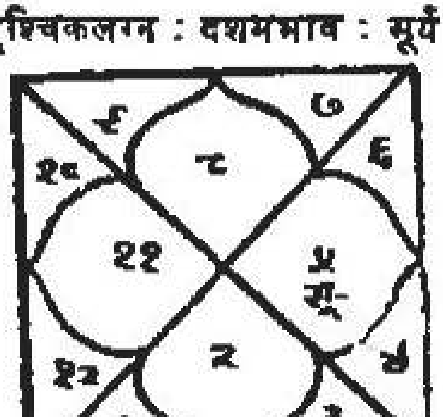

२८८

दसवें भाव में स्वराशि-स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, सहयोग, लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। वह अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए उग्र कर्म भी करता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से जातक का अपनी माता के साथ वैमनस्य रहता है तथा भूमि एवं भवन के सुख में कमी रहती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : एकादशभाव : सूर्य

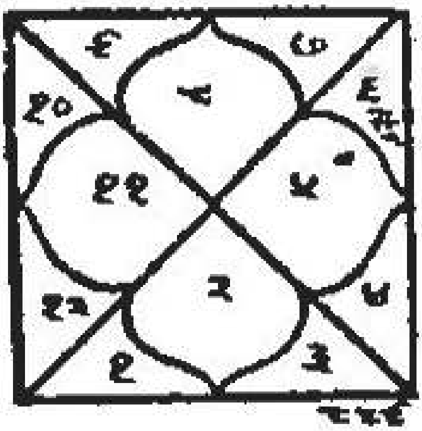

८८९

ग्यारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को अपने पिता द्वारा श्रेष्ठ लाभ होता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सम्मान, धन, लाभ एवं सहयोग की प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष से भी श्रेष्ठ लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति स्वाभिमानी, तेज स्वभाव का, प्रतिष्ठित तथा यशस्वी होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : द्वादशभाव : सूर्य

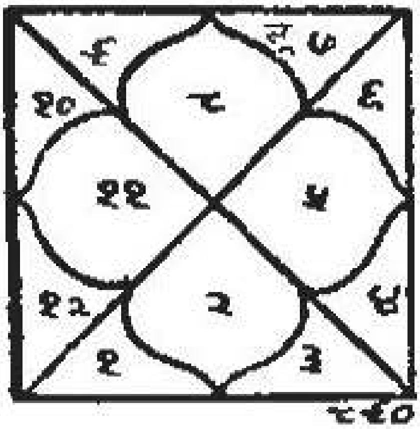

८९०

बारहवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित नीच के 'सूर्य' के प्रभाव से जातक बड़ी कठिनाई से खर्च चलाता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी कष्ट होता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं उच्च मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है तथा झगड़े-मुकदमे आदि से भी लाभ मिलता है।

'वृश्चिक' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

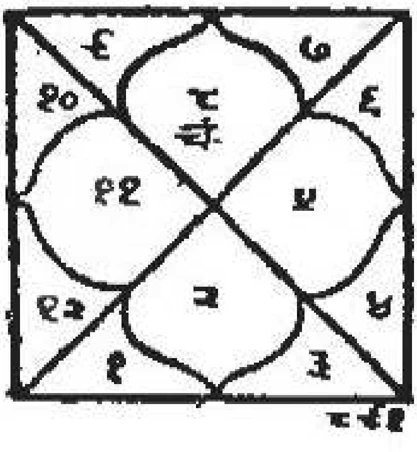

८९१

पहले भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक का शरीर कुछ दुर्बल रहता है तथा यश भी कठिनाई से मिलता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से सुन्दर तथा मनोनुकूल स्त्री प्राप्त होती है एवं दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती रहती हैं।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : द्वितीयभाव : चंद्र

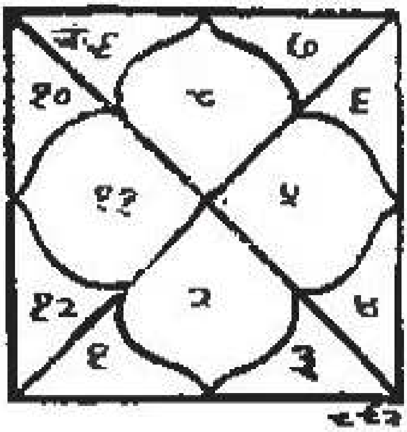

दूसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को धन-संचय में सफलता मिलती है तथा कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होता है। परन्तु वह धर्म का यथाविधि पालन नहीं करता।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा आयु की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा भाग्यशाली होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्द्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : तृतीयभाव : चंद्र

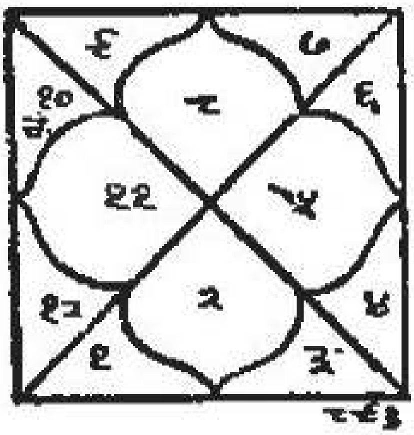

तीसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी आती है। मानसिक शक्ति बहुत प्रबल होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में नवम भाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ द्वारा यशस्वी एवं भाग्यशाली बनता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : चतुर्थभाव : चंद्र

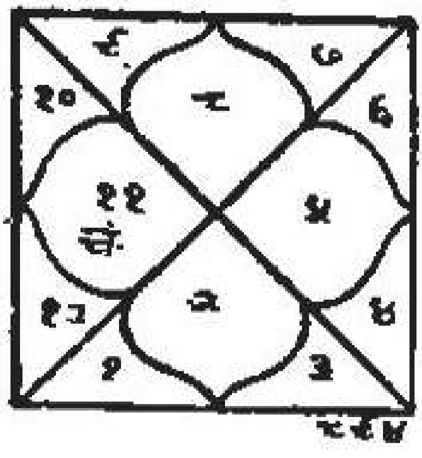

चौथे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को कुछ असन्तोष के साथ माता, भूमि एवं भवन का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। वह धर्म का पालन करता है तथा मनोयोग के द्वारा भाग्य की उन्नति करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में सुख, सम्मान, लाभ एवं सफलता की प्राप्ति होती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'चन्द्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : पंचमभाव : चंद्र

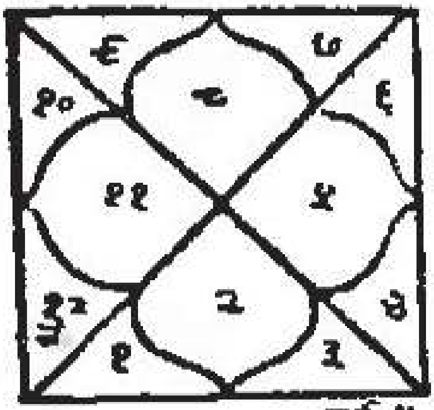

चक्र ५

पाँचवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में अच्छी सफलता मिलती है। वह सज्जन, विनम्र, मधुरभाषी, धर्मात्मा तथा अपने बुद्धि-बल से भाग्य की उन्नति करने वाला भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से भाग्य की वृद्धि होती है तथा लाभ भी खूब होता रहता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'चन्द्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : षष्ठभाव : चंद्र

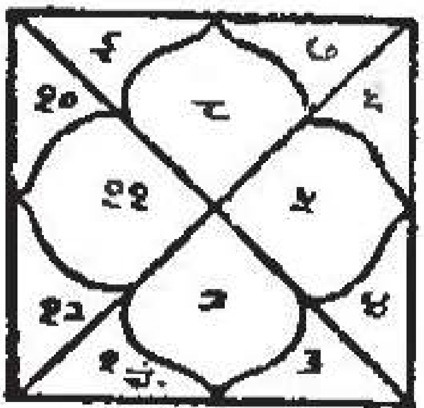

चक्र ६

छठे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में अपनी शान्ति-नीति से सफलता मिलती है। यों, शत्रुओं के कारण मन में अशान्ति भी बनी रहती है।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से भाग्य-बल पर खर्च चलता रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ एवं सफलताओं की प्राप्ति भी होती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : सप्तमभाव : चंद्र

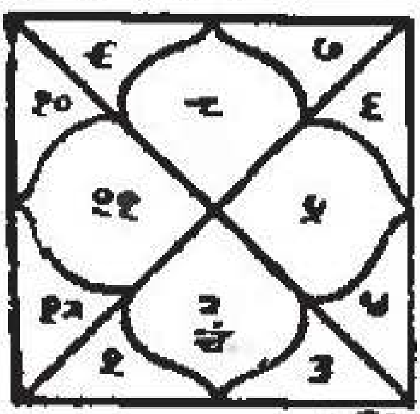

चक्र ७

सातवें भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित उच्च के 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को सुन्दर तथा भाग्यशालिनी स्त्री मिलती है। उसका गृहस्थ जीवन सुखमय रहता है। दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं। मनोबल बढ़ा रहने के कारण भाग्य तथा यश में भी वृद्धि होती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शरीर में कुछ कमजोरी रहती है तथा भाग्य एवं धर्म के पक्ष में भी कुछ न्यूनता बनी रहती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

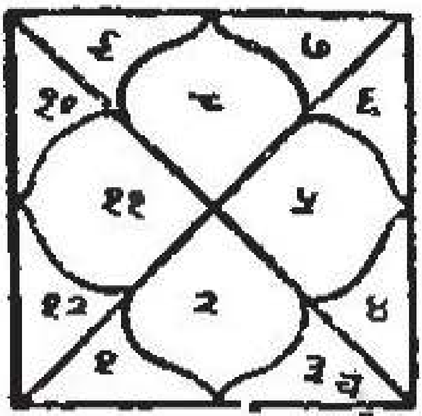

८९८

आठवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख का लाभ भी पर्याप्त मिलता है।

ऐसा व्यक्ति शान्त स्वभाव वाला, धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : नवमभाव : चन्द्र

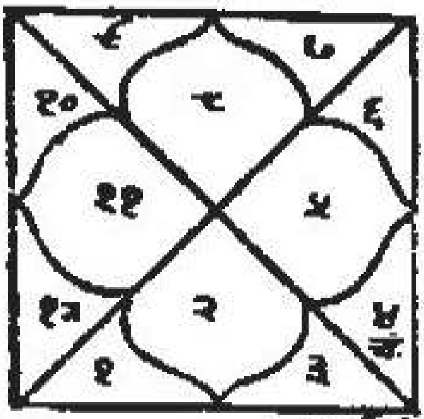

८९९

नवें भाव में स्वराशिस्थ 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के धर्म तथा भाग्य की अच्छी उन्नति होती है। वह यशस्वी तथा धनी होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख त्रुटिपूर्ण रहता है, परन्तु पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है।

ऐसा व्यक्ति सुख तथा समृद्धि से युक्त जीवन बिताता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : दशमभाव : चन्द्र

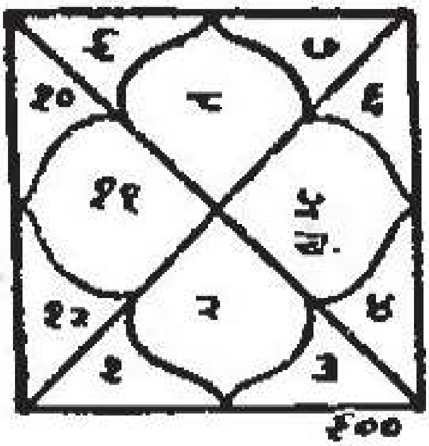

९००

दसवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलताएँ मिलती हैं। वह धर्मात्मा तथा भाग्यशाली होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। परन्तु जातक सुखी, यशस्वी, सन्तुष्ट तथा धनी जीवन बिताता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : एकादशभाव : चन्द्र

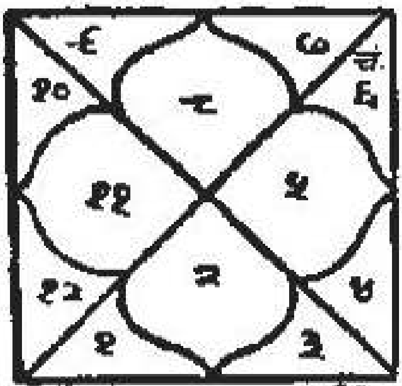

९०१

ग्यारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को श्रेष्ठ लाभ होता रहता है। वह धर्मपरायण, भाग्यशाली, सुखी तथा यशस्वी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या-बुद्धि एवं सन्तान का श्रेष्ठ लाभ होता है, वाणी में शक्ति रहती है तथा मनोबल बढ़ा-चढ़ा रहता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'चन्द्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : द्वादशभाव : चन्द्र

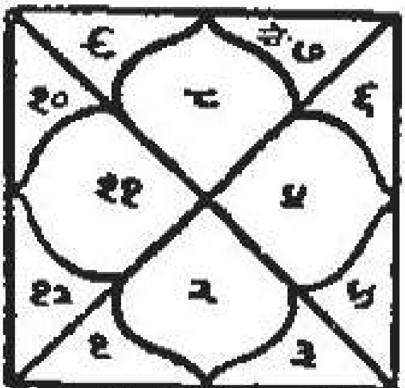

९०२

बारहवें भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु उसकी पूर्ति के लिए किसी कठिनाई का अनुभव नहीं होता। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से अत्यधिक लाभ होता है। स्वदेश में भाग्य कमजोर रहता है, परन्तु विदेश में तरक्की होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में शक्ति से काम निकालता है तथा भाग्य-बल से कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता है।

'वृश्चिक' लग्न में 'मंगल'

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : प्रथमभाव : मंगल

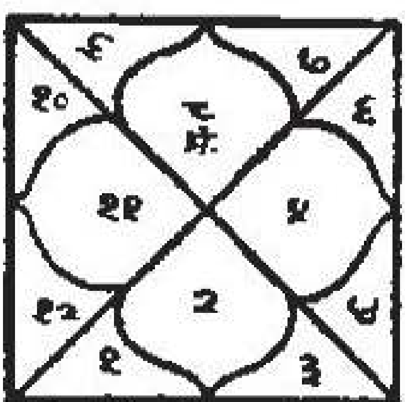

९०३

पहले भाव में स्वराशि में स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है तथा शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है।

चौथी शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : द्वितीयभाव : मंगल

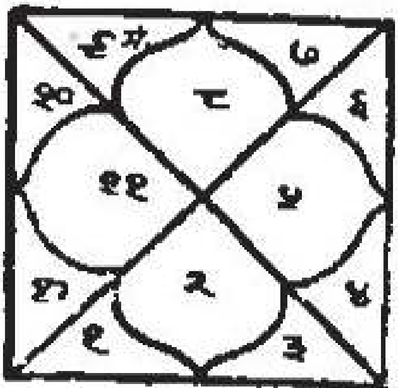

६०४

दूसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक अपने शारीरिक श्रम द्वारा धनोपार्जन करता है तथा कुछ परेशानियों के साथ कौटुम्बिक सुख भी प्राप्त करता है। शारीरिक सुख एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है किन्तु शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। चौथी मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। आठवीं नीच-दृष्टि से नवम भाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की हानि होती है और यश की भी कमी रहती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : तृतीयभाव : मंगल

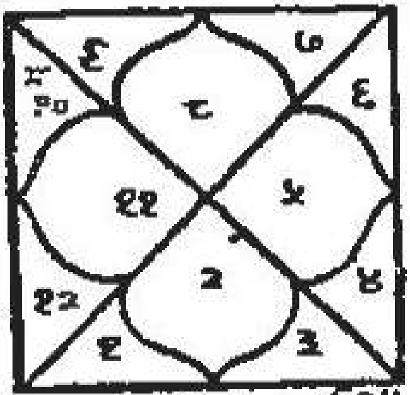

६०५

तीसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों से सामान्य वैमनस्य रहता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से नवम भाव को देखने से धर्म का यथाविधि पालन नहीं होता तथा भाग्य की अपेक्षा पुरुषार्थ का अधिक भरोसा रखा जाता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में सुख, सहयोग, लाभ तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : चतुर्थभाव : मंगल

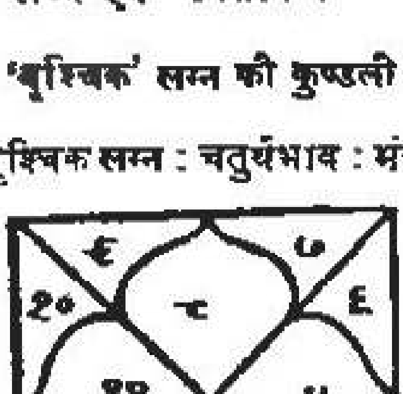

६०६

चौथे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। चौथी सामान्य शत्रु-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री-पक्ष से सामान्य मतभेद-युक्त सुख प्राप्त होता है तथा दैनिक व्यवसाय में सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सफलता, लाभ एवं यश की प्राप्ति होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी बहुत अच्छी रहती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : पंचमभाव : मंगल

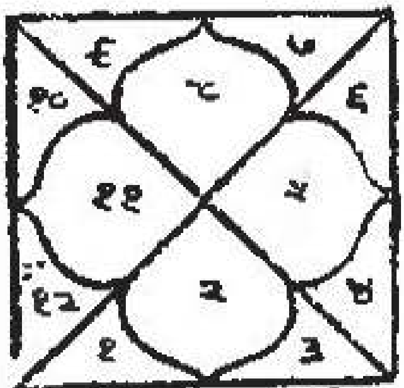

९०७

पाँचवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। शत्रु-पक्ष पर विजय पाने के लिए गहरी चालें चलनी पड़ती हैं। चौथी मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी खूब होती है।

आठवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहने में परेशानी का अनुभव होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : षष्ठभाव : मंगल

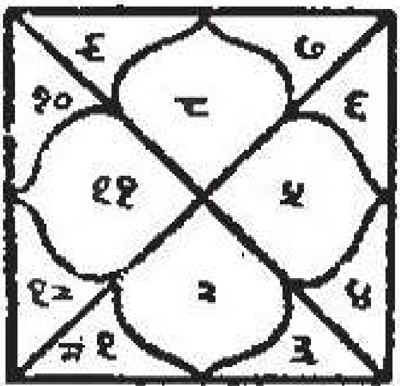

९०८

छठे भाव में स्वराशि में स्थित 'मंगल' के प्रभावसे जातक को शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। चौथी नीच-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म में कमी रहती है। सम्मान में भी कमी आती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादश भाव से देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों से सम्बन्ध से लाभ होता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथमभाव को देखने से शरीर के प्रभाव तथा आत्म-बल में सामान्य वृद्धि होती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : सप्तमभाव : मंगल

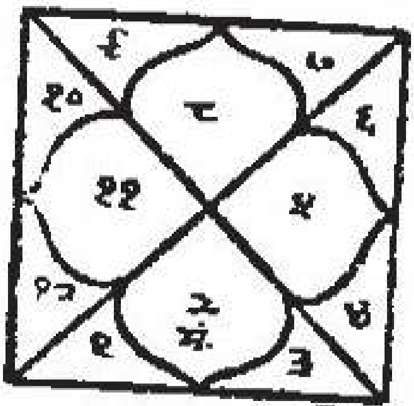

९०९

सातवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कुछ परेशानी रहती है, जननेन्द्रिय में विकार होता है तथा दैनिक व्यवसाय में भी कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। चौथी मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय पक्ष में सुख-सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के प्रथमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति एवं व्यक्तित्व का विकास होता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति मानाकांक्षी सुखी रहता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : अष्टमभाव : मंगल

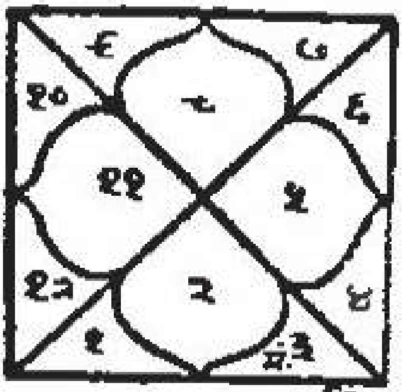

९१०

आठवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा सुख में कमी आती है। आयु तथा पुरातत्त्व के लाभ में भी कमी रहती है। पेट में विकार रहता है तथा शत्रु-पक्ष से परेशानी होती है। चौथी मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कौटुम्बिक सुख की वृद्धि विशेष प्रयत्न से होती है। आठवीं उच्च दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन की शक्ति प्राप्त होती है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : नवमभाव : मंगल

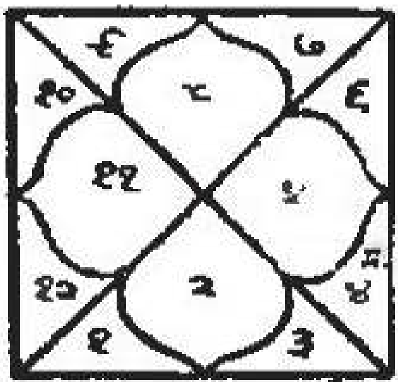

९११

नवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित नीच के 'मंगल' के प्रभाव से जातक के धर्म तथा भाग्य में कुछ कमी रहती है। शत्रु-पक्ष के झंझट से भी भाग्योन्नति में बाधा पड़ती है। वैसे जातक धनी होता है। चौथी शत्रु-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में वृद्धि होती है। आठवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : दशमभाव : मंगल

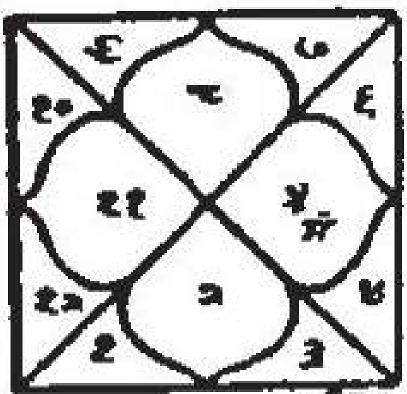

९१२

दसवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर 'स्थित' मंगल के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सफलता, सहयोग तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में प्रथम भाव को देखने से शारीरिक शक्ति प्रबल रहती है। ऐसा व्यक्ति सम्पन्न तथा स्वाभिमानी होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। आठवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : एकादशभाव : मंगल

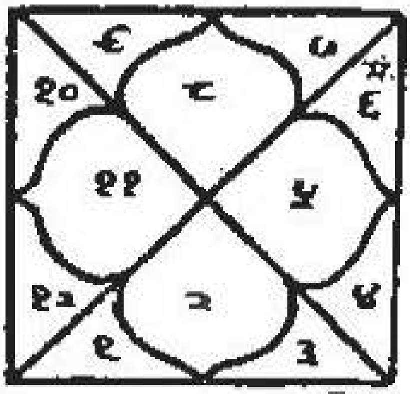

९१३

ग्यारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक शारीरिक परिश्रम द्वारा पर्याप्त लाभ कमाता रहता है। परन्तु शत्रु-पक्ष से कुछ कष्ट होता है तथा शरीर रोगी भी हो जाया करता है। चौथी मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन एवं कुटुम्ब के सुख में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठम भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है तथा ननसाल पक्ष से लाभ होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : द्वादशभाव : मंगल

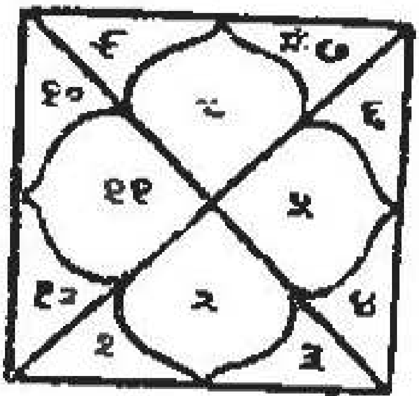

९१४

बारहवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख-शान्ति मिलती है। चौथी उच्च-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती रहती है।

आठवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री से कुछ वैमनस्य रहते हुए भी सुख मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय में कुछ परेशानियों के साथ लाभ होता है।

'वृश्चिक' लग्न में 'बुध'

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : प्रथमभाव : मंगल

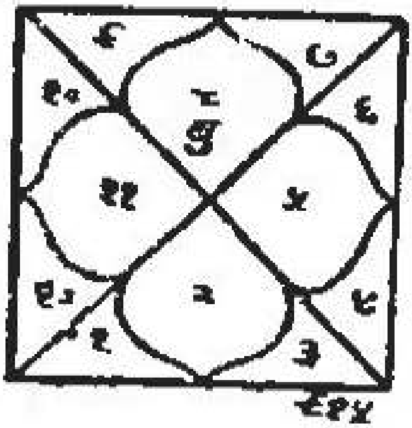

९१५

पहले भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के शारीरिक प्रभाव में वृद्धि होती है। उसे आयु एवं शक्ति का लाभ भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री-पक्ष में कुछ कठिनाई के लाभ सहयोग मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय में भी परिश्रम के बाद ही सफलता मिलती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : द्वितीयभाव : बुध

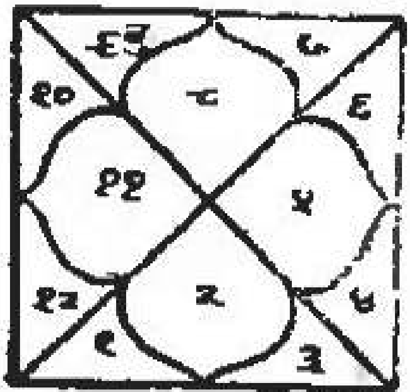

२९६

दूसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्व का लाभ होता है।

ऐसी ग्रहस्थिति वाला व्यक्ति शान-शौकत का जीवन बिताता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : तृतीयभाव : बुध

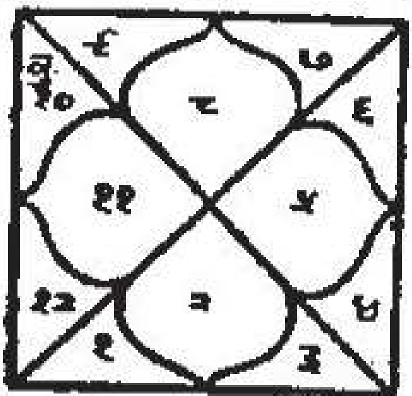

२९७

तीसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी प्राप्त होता है। साथ ही आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से नवम भाव को देखने से जातक स्वविवेक-शक्ति द्वारा भाग्य एवं धर्म की उन्नति करता है।

ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी, धर्मात्मा तथा पराक्रमी होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : चतुर्थभाव : बुध

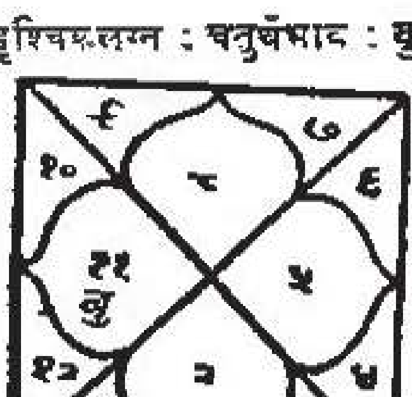

२९८

चौथे भाव में, मित्र-'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है तथा आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि भी होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सुख, सफलता, लाभ तथा यश की प्राप्ति होती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : पंचमभाव : बुध

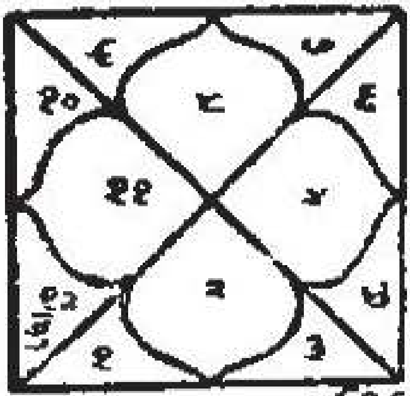

नं १९

पाँचवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित नीच के 'बुध' के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष में कष्ट का सामना करना पड़ता है, परन्तु स्वविवेक-शक्ति से लाभ भी होता है। आयु के क्षेत्र में कुछ परेशानी आती है। पुरातत्त्व का स्वल्प लाभ होता है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से स्वराशि में एकादश भाव को देखने से आमदनी बहुत अच्छी रहती है तथा जीवन सुख से बीतता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : षष्ठभाव : बुध

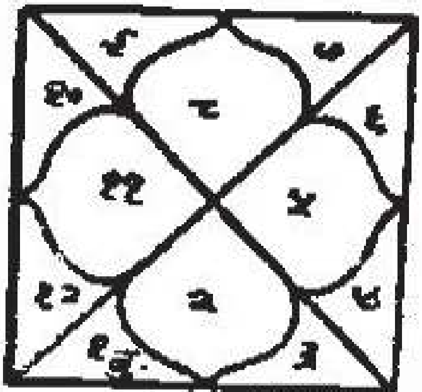

नं २०

छठे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक शत्रुपक्ष पर विजय पाता है। कुछ कठिनाइयों के साथ आमदनी बढ़ती है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ भी मिलता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : सप्तमभाव : बुध

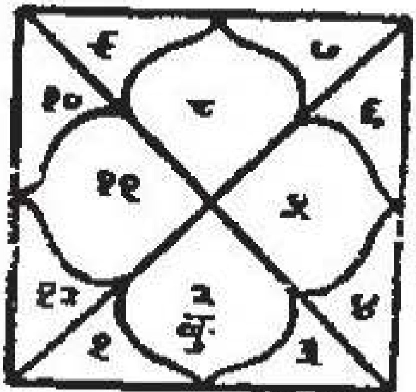

नं २१

सातवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा आयु एवं पुरातत्त्व का भी लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक बल एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है तथा दैनिक जीवन लाभ-शौकत से व्यतीत होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : अष्टमभाव : बुध

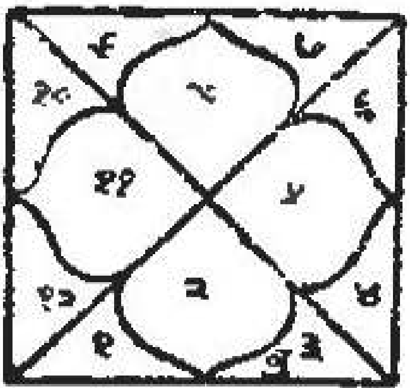

२२

आठवें भाव में स्वराशि स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से जातक स्वविवेक द्वारा धन का संचय करता है। उसे कौटुम्बिक सुख भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अमीरी ढंग का जीवन बिताता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : नवमभाव : बुध

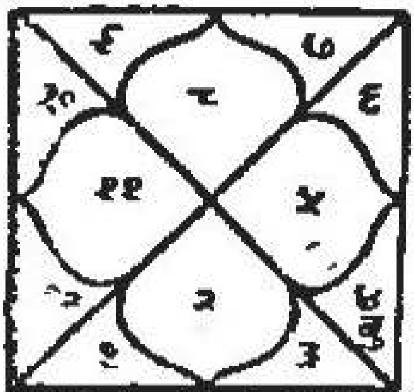

२३

नवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। साथ ही आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से कुछ कमियों के साथ ही भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि भी होती है। ऐसा व्यक्ति प्रायः सुखी तथा भाग्यशाली जीवन बिताता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : दशमभाव : बुध

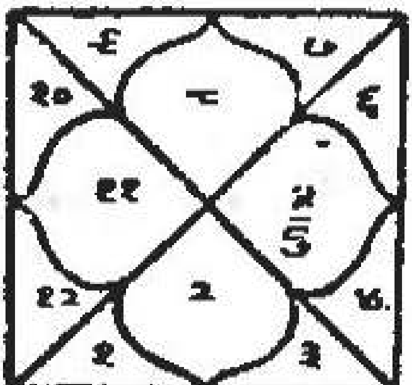

२४

दसवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ पिता का सुख एवं लाभ तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सम्मान और सफलता की प्राप्ति होती है। पुरातत्त्व एवं आयु का लाभ भी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ माता, भूमि एवं भवन आदि का सुख भी प्राप्त होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : एकादशभाव : बुध

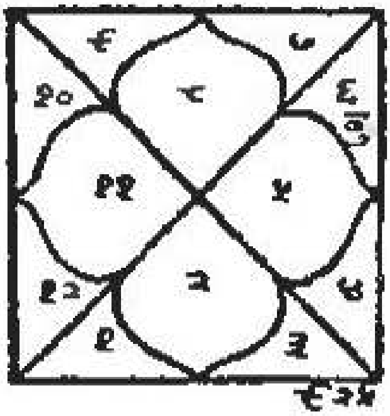

ग्यारहवें भाव में स्वराशि-स्थित उच्च के 'बुध' के प्रभाव से जातक की आमदनी खूब रहती है। आयु तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में अच्छी सफलता मिलती है।

ऐसा व्यक्ति कुछ रूखे स्वभाव का भी होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : द्वादशभाव : बुध

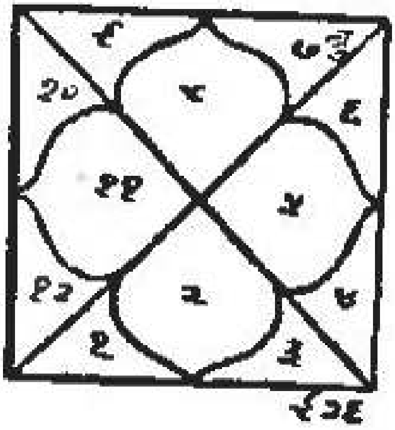

बारहवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ भी होता है। आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति भी बढ़ती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में विवेक-बुद्धि एवं विनम्रता से काम निकालता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन भ्रमणशील होता है तथा चित्त में कुछ अशान्ति भी बनी रहती है।

'वृश्चिक' लग्न में 'गुरु'

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : प्रथमभाव : गुरु

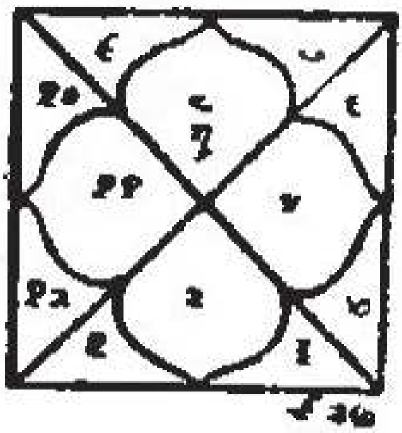

पहले भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को शारीरिक शक्ति तथा प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में श्रेष्ठ सफलता मिलती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री से कुछ मतभेद रहता है तथा दैनिक व्यवसाय में पहले सामान्य कठिनाइयाँ आती हैं, किन्तु बाद में लाभ भी होता है। स्त्री से भी सुख मिलता है।

नवीं उच्चदृष्टि से नवम भाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की विशेष उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी तथा भाग्यशाली होता है।

श्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

श्चिक लग्न : द्वितीयभाव : बुध

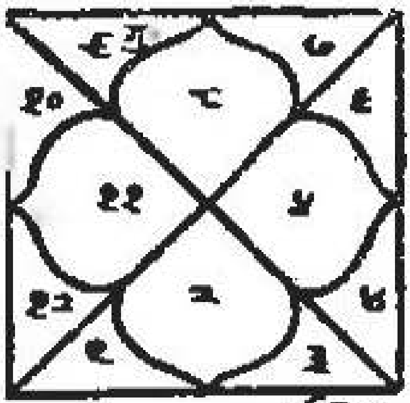

९२८

दूसरे भाव में स्वराशि में स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का उत्तम सुख प्राप्त होता है। सन्तान-पक्ष में कुछ कमी रहती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में बुद्धिमानी से सफलता मिलती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है। नवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य, पिता एवं व्यवसाय के द्वारा सुख, सम्मान व तथा यश की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा बुद्धिमान तथा धनी होता है।

श्चिक' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

श्चिक लग्न : तृतीयभाव : गुरु

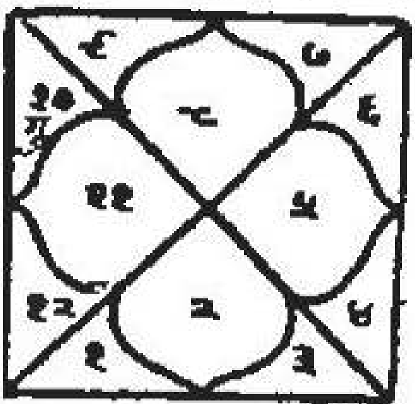

९२९

तीसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख में बाधा आती है तथा पराक्रम में भी कमी रहती है। विद्या, धन तथा कुटुम्ब का सुख भी कम रहता है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री से कुछ वैमनस्य रहता है तथा व्यवसाय में कठिनाई से सफलता मिलती है।

सातवीं उच्च दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। वीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी में खूब वृद्धि होती है। ऐसा क्ति सुखी तथा धनी होता है।

श्चिक' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

श्चिक लग्न : चतुर्थभाव : गुरु

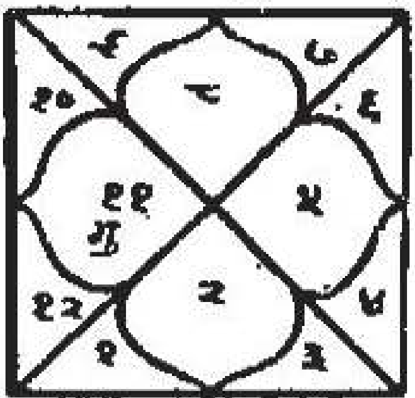

९३०

चौथे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक का माता के साथ कुछ वैमनस्य रहता है तथा भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। विद्या तथा सन्तान-पक्ष में भी कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ, श, सहयोग तथा सम्मान मिलता है। नवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से र्च की अधिकता रहती है तथा बाहरी सम्बन्धों से सामान्य लाभ होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : पंचमभाव : गुरु

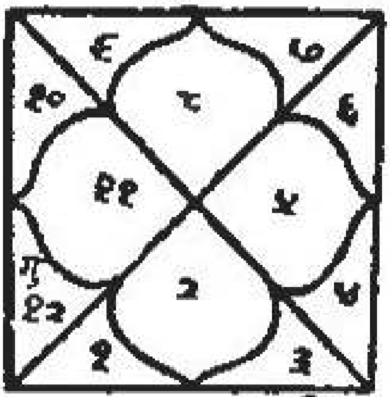

९३१

पाँचवें भाव में स्वराशि-स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी उसे मिलता है। पाँचवीं मित्र तथा उच्चदृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की विशेष उन्नति होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी खूब रहती है। नवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, शक्ति, सम्मान, प्रतिष्ठा तथा यश की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा ऐश्वर्यशाली होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : षष्ठभाव : गुरु

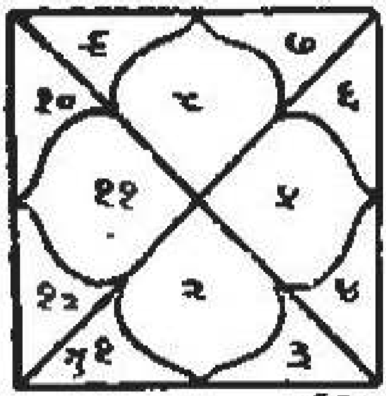

९३२

छठे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में बुद्धि-बल से सफलता पाता है तथा धन एवं कुटुम्ब के कारण झगड़ों में फंसता है। विद्या तथा सन्तान पक्ष कमजोर रहता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के द्वारा लाभ, सुख, सम्मान आदि की प्राप्ति होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है। कुटुम्ब से कुछ वैमनस्य भी रहता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : सप्तमभाव : गुरु

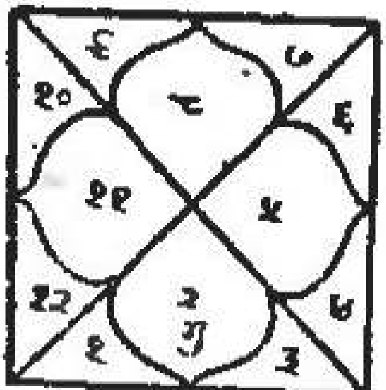

९३३

सातवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को सामान्य मतभेदों के बावजूद स्त्री का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है तथा व्यवसाय में सफलता मिलती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी खूब रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव की प्राप्ति होती है। नवीं नीचदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी का अनुभव होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : अष्टमभाव : गुरु

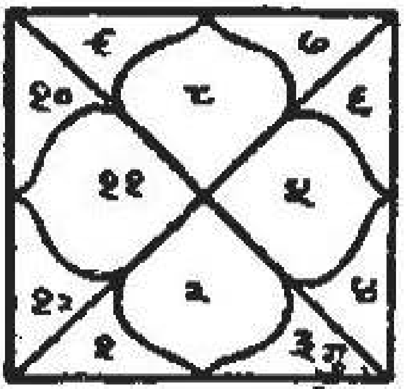

६३४

आठवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्व का श्रेष्ठ लाभ होता है, परन्तु विद्या, बुद्धि, सन्तान, धन एवं कुटुम्ब के सुख में कमी रहती है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कौटुम्बिक सुख की वृद्धि होती है। नवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कठिनाइयों के साथ मिलता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : नवमभाव : गुरु

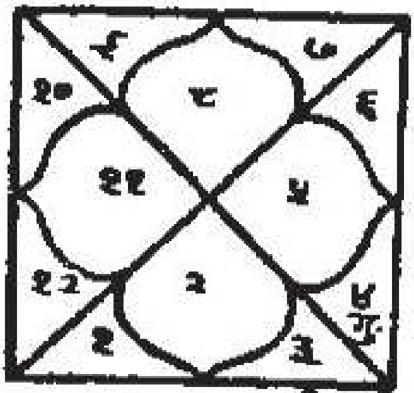

६३५

नवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित उच्च के 'गुरु' के प्रभाव से जातक के धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक प्रभाव एवं मान सम्मान की उपलब्धि होती है।

सातवीं नीचदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी रहती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखने से सन्तान एवं विद्या-बुद्धि की विशेष उन्नति होती है तथा जातक यशस्वी बनता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : दशमभाव : गुरु

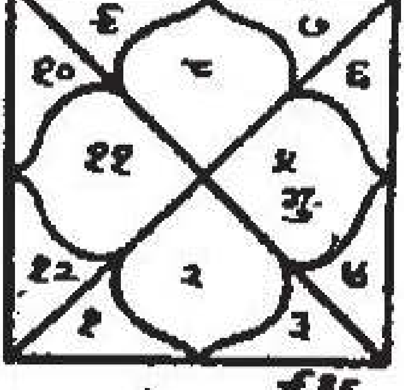

६३६

दसवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, लाभ, सफलता तथा यश की प्राप्ति होती है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख की वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ असन्तोष के साथ प्राप्त होता है।

नवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में बुद्धिमानी से सफलता एवं विजय प्राप्त होती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : एकादशभाव : गुरु

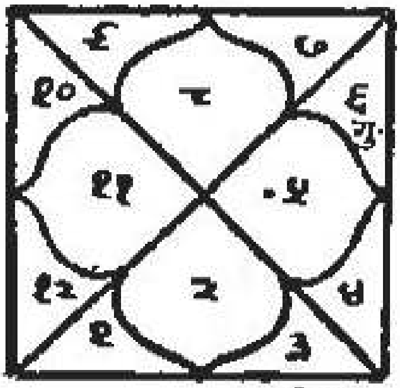

६२७

ग्यारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। पाँचवीं शत्रु तथा नीच दृष्टि से तृतीयभाव में देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी आती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान-पक्ष की विशेष उन्नति होती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से पत्नी के साथ कुछ वैमनस्य रहते हुए भी लाभ होता है तथा दैनिक व्यवसाय में भी कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : द्वादशभाव : गुरु

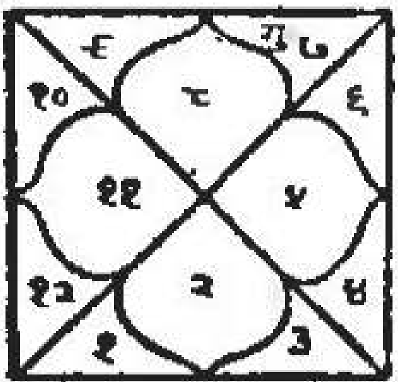

६२८

बारहवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्ध भी कमजोर रहते हैं। धन, कुटुम्ब, विद्या तथा सन्तान के क्षेत्र में भी कमी रहती है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में चतुराई से सफलता प्राप्त होती है। नवीं मित्र दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की अच्छी शक्ति प्राप्त होती है। ऐसी ग्रह-स्थिति वाले जातक का चित्त प्रायः अशान्त ही बना रहता है।

'वृश्चिक' लग्न में 'शुक्र'

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : प्रथमभाव : शुक्र

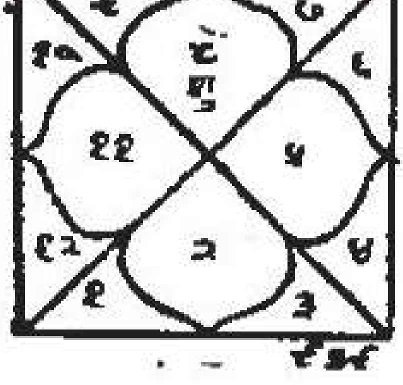

६२९

पहले भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' से प्रभाव से जातक का शरीर कमजोर रहता है, परन्तु प्रभाव, चातुर्य एवं कार्य-कुशलता में वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री का सुख मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त होती रहती है, परन्तु शुक्र के व्ययेश होने के कारण इन क्षेत्रों में सामान्य कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

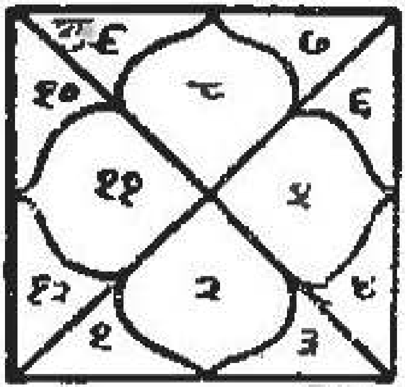

६४०

दूसरे भाव में सामान्य शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के धन तथा कौटुम्बिक सुख में कुछ परेशानी रहती है यद्यपि धन का लाभ भी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु में वृद्धि होती है, परन्तु पुरातत्त्व का लाभ कम रहता है। ऐसा व्यक्ति धनी तथा चतुर समझा जाता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : तृतीयभाव : शुक्र

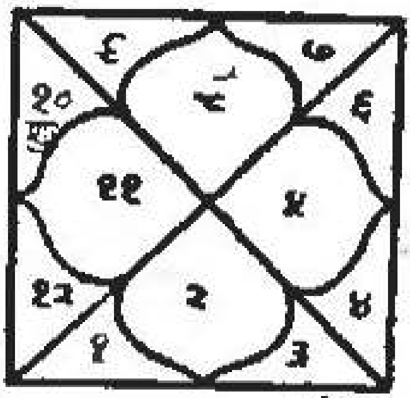

६४१

तीसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की भाई-बहिन के सुख तथा पुरुषार्थ में कमी प्राप्त होती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ भी होता है। स्त्री-पक्ष में भी कुछ कमी रहती है।

सातवी शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्योन्नति में कुछ कमी रहती है तथा धर्म का पालन भी थोड़ा ही होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

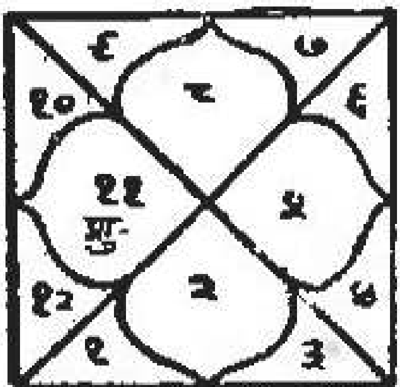

६४२

चौथे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। स्त्री-पक्ष भी कमजोर रहता है। बाहरी सम्बन्धों से सुख प्राप्त होता है और खर्च आराम से चलता रहता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद लाभ, सुख, यश एवं सफलता की प्राप्ति होती रहती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : पंचमभाव : शुक्र

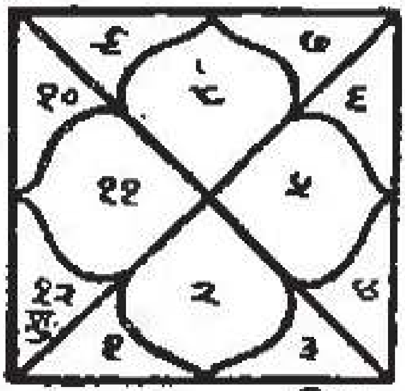

९४३

पाँचवें भाव में सामान्य शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित उच्च के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है, परन्तु ग्रह किसी कला का विशेषज्ञ भी अवश्य होता है। ऐसा व्यक्ति स्त्री के प्रभाव में रहने वाला तथा वाक्-चतुर होता है। उसे बाहरी सम्बन्धों से शक्ति एवं लाभ भी प्राप्ति होता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के मार्ग में भी कुछ कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : षष्ठभाव : शुक्र

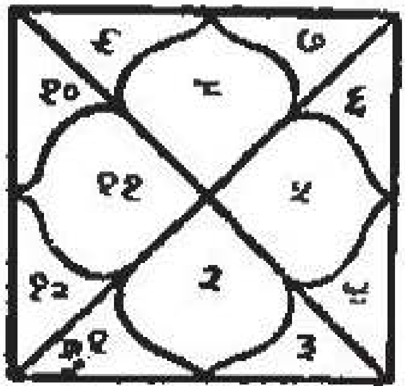

९४४

छठे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक शान्तिपूर्ण उपायों द्वारा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है। गृहस्थी के संचालन में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादशभाव को देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से अधिक परिश्रम द्वारा सामान्य लाभ प्राप्त होता है तथा खर्च की अधिकता बनी रहती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : सप्तमभाव शुक्र

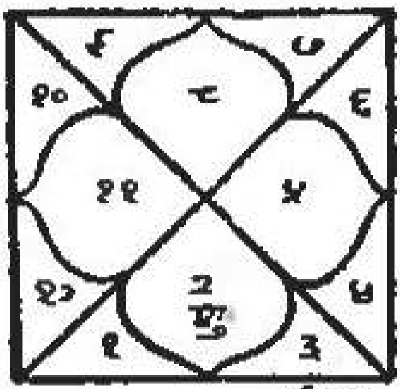

९४५

सातवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को स्त्री एवं दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छी सफलता मिलती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से अपना खर्च चलाने में सहायता भी मिलती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा बुद्धिमान होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर में दुर्बलता रहती है, फिर भी जातक यशस्वी, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला तथा कार्य-कुशल होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : अष्टमभाव : शुक्र

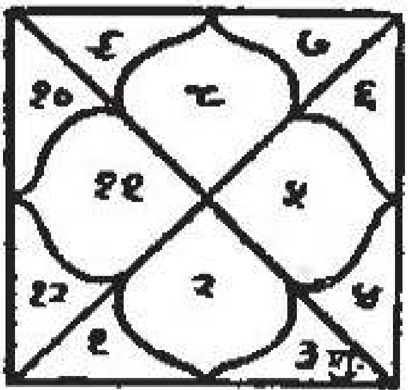

९६६

आठवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में संकटों तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यही स्थिति स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी रहती है, परन्तु गुप्त चातुर्य एवं कठिन परिश्रम द्वारा सफलता प्राप्त होती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख में भी कठिनाइयाँ आती हैं। बड़ी चतुराई से काम लेकर जातक किसी तरह अपनी इज्जत बचाता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : नवमभाव : शुक्र

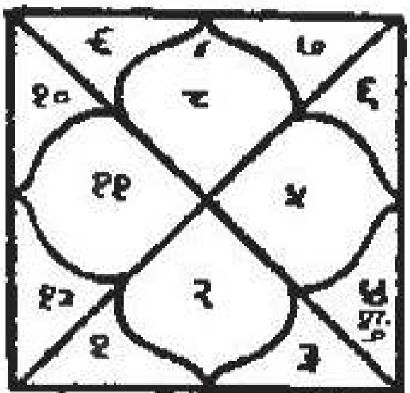

९६७

नवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन के क्षेत्र में कठिनाइयां आती हैं। स्त्री-पक्ष से भी परेशानी रहती है। यह बड़ी चतुराई से काम निकालता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ उठाता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन एवं पराक्रम के क्षेत्र में भी असन्तोष-जनक स्थिति बनी रहती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : दशमभाव : शुक्र

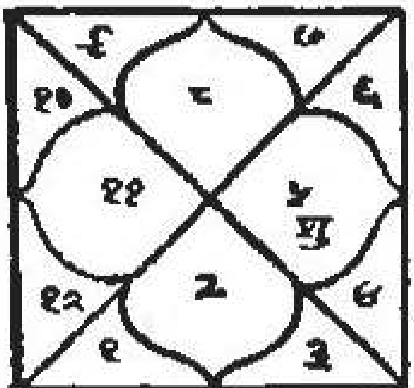

९६८

दसवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्रमें कुछकठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी कमी बनी रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख-सहयोग प्राप्त होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : एकादशभाव : शुक्र

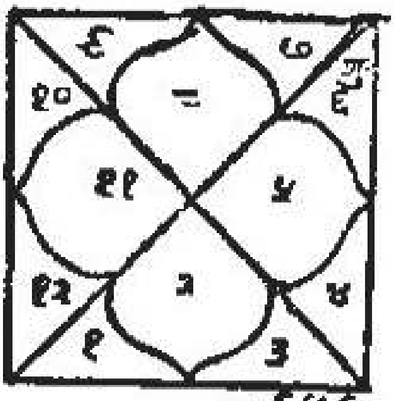

६४९

ग्यारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित नीच के 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की आमदनी में कमी आती है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय का क्षेत्र भी असन्तोषजनक रहता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से चातुर्य द्वारा कुछ लाभ भी मिलता है।

सातवीं उच्च तथा शत्रु दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि की शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु सन्तान-पक्ष में कुछ कमजोरी बनी रहती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली से 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : द्वादशभाव : शुक्र

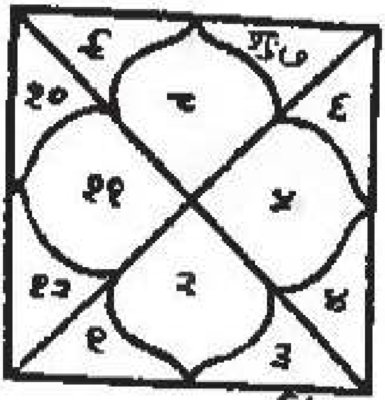

६५०

बारहवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के पक्ष में भी कुछ परेशानियाँ रहती हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में भी कुछ परेशानियों के बाद ही सफलता प्राप्त होती है।

'वृश्चिक' लग्न में 'शनि'

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : प्रथमभाव : शनि

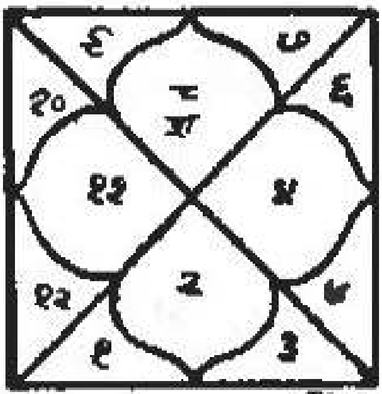

६५१

पहले भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक का स्वभाव शान्त तथा उग्र दोनों प्रकार का होता है। माता, भूमि तथा भवन का सामान्य सुख मिलता है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में तृतीयभाव को देखने से पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के बाद ही सफलता मिलती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : द्वितीयभाव : शनि

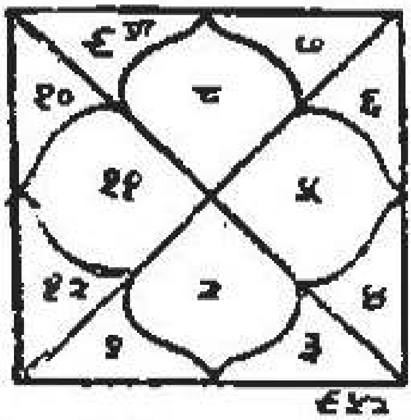

दूसरे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को धन, कुटुम्ब का सामान्य सुख मिलता है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। दसवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। ऐसा जातक सुखी तथा धनी जीवन बिताता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : तृतीयभाव : शनि

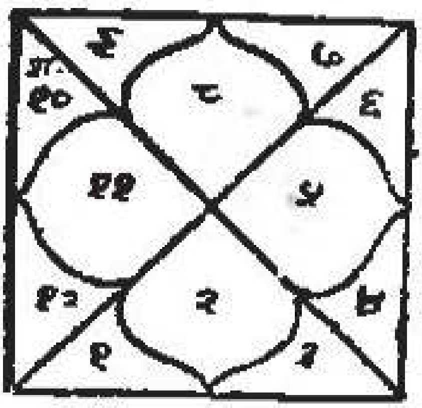

तीसरे भाव में स्वक्षेत्री 'शनि' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। माता, भूमि एवं भवन का सुख भी मिलता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य की उन्नति होती है तथा मतभेदों के साथ धर्म का भी पालन होता है। दसवीं उच्च तथा मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अच्छी तरह चलता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : चतुर्थभाव : शनि

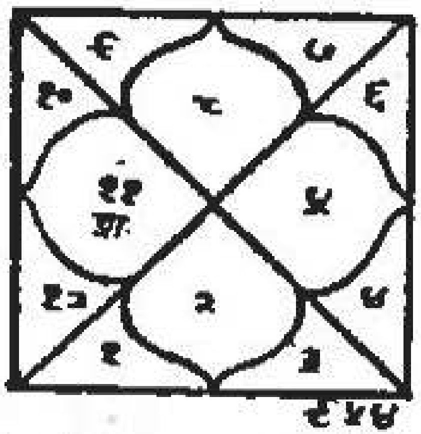

चौथे भाव में स्वराशि-स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है। तीसरी नीच-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष द्वारा अशान्ति मिलती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता से मतभेद रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी अधिक सफलता नहीं मिलती। दसवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है किन्तु जातक बहुत परिश्रमी होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : पंचमभाव : शनि

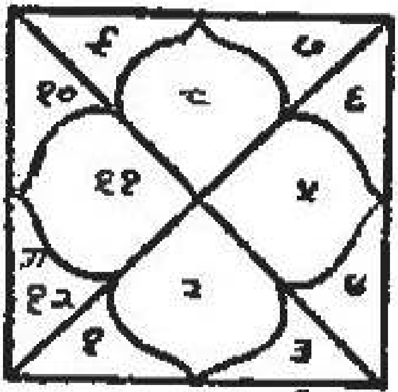

६५५

पाँचवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को सन्तान-सुख तो मिलता है, परन्तु सन्तान से मतभेद भी रहता है। विद्या-बुद्धि पर्याप्त रहती है। माता से वैमनस्य रहता है तथा भूमि-भवन का सामान्य सुख प्राप्त होता है। तीसरी मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में पूर्ण सुख एवं सफलता की प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से कुटुम्ब से वैमनस्य रहता है तथा अधिक प्रयत्न करने पर भी धन का विशेष संचय नहीं हो पाता।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : षष्ठभाव : शनि

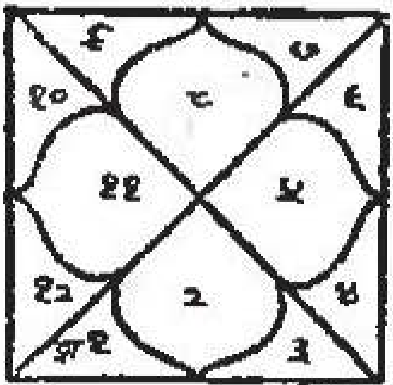

६५६

छठे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में युक्ति से काम निकालता है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी अल्प मात्रा में प्राप्त होता है। तीसरी मित्र दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीयभाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है तथा विरोध रहते हुए भी भाई-बहिनों का सुख मिलता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : सप्तमभाव : शनि

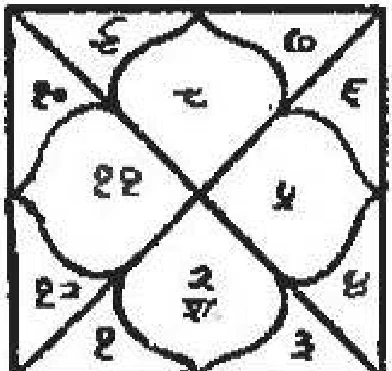

६५७

सातवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सुख एवं सफलता की प्राप्ति होती है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कमी रहती है तथा श्रम अधिक करना पड़ता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। दैनिक जीवन प्रभावशाली तथा आमोदपूर्ण रहता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : अष्टमभाव : शनि

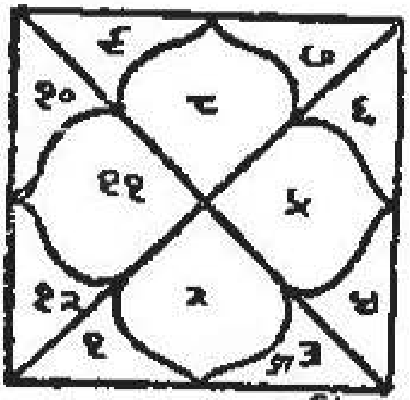

९५८

आठवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु माता के सुख में बहुत कमी आती है। भूमि, भवन तथा भाई-बहिनों का सुख भी कम ही मिलता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय में कमी तथा कुटुम्ब से वैमनस्य रहता है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का पक्ष अपूर्ण रहता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : नवमभाव : शनि

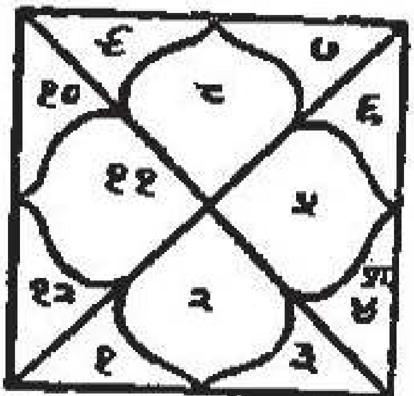

९५९

नवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित शनि' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति कुछ रुकावटों के साथ होती है तथा धर्म का पालन भी कठिनाई सहित होता है। माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। तीसरी मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखनेसे आमदनी खूब रहती है तथा धन का अच्छा लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। दसवीं नीच तथा शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष में परेशानी रहती है तथा ननसाल पक्ष कमजोर रहता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : दशमभाव : शनि

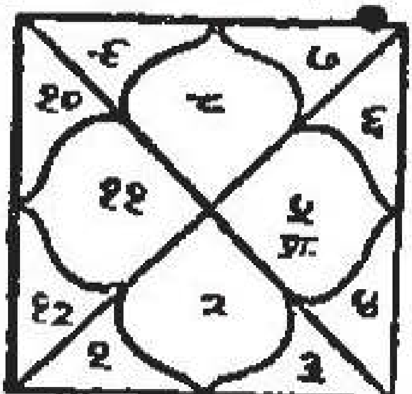

९६०

दसवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की कुछ कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, सहयोग तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। भाई-बहिनों का सुख भी कम ही मिलता है परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है। तीसरी मित्र तथा उच्च दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता से कुछ मतभेद रहता है तथा भूमि, भवन का सुख प्राप्त होता है। दसवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छी सफलता मिलती है तथा घरेलू जीवन सुखमय बना रहता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : एकादशभाव : शनि

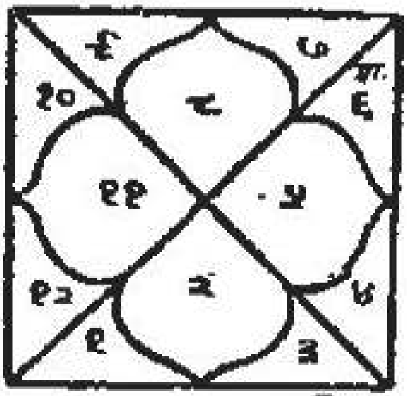

६६१.

ग्यारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अच्छी वृद्धि होती है। भाई-बहिन, माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है तथा पराक्रम भी बढ़ता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या एवं सन्तान का लाभ होता है। दसवी मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से जातक दीर्घायु होता है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : द्वादशभाव : शनि

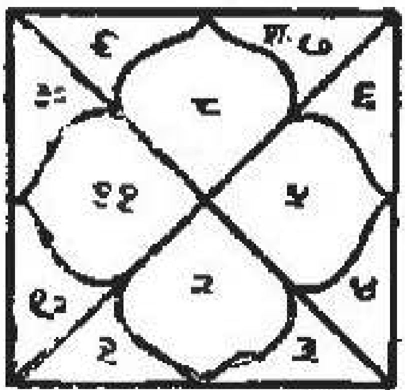

६६२.

बारहवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित उच्च के 'शनि' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से सुख एवं लाभ की प्राप्ति भी होती है। भाई-बहिन, माता तथा भवन के सुख में भी कुछ कमी आ जाती है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख में कमी रहती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुपक्ष से परेशानी रहती है। दसवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अधिक धनी न होते हुए भी अमीरी ढंग से जीवन बिताता है।

'वृश्चिक' लग्न में 'राहु'

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृश्चिकलग्न : प्रथमभाव : राहु

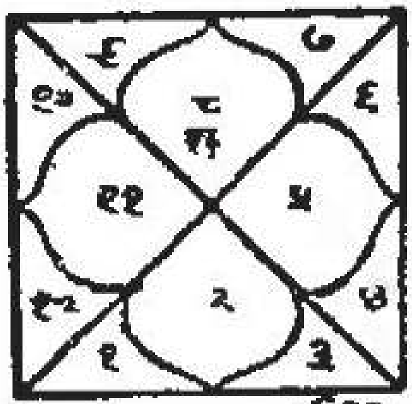

६६३

पहले भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शरीर में किसी गुप्त कष्ट अथवा चिन्ता का निवास रहता है। कभी-कभी उसे मृत्यु-तुल्य शारीरिक कष्ट भी होता है।

वह उन्नति के लिए कठिन परिश्रम करता है तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है। ऐसा व्यक्ति तेज स्वभाव का, स्वार्थी तथा असुन्दर होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : द्वितीयभाव : राहु

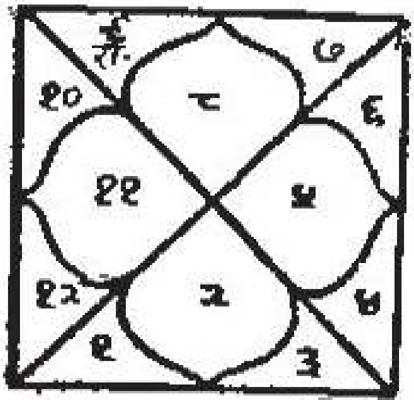

९६४

दूसरे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को धन-प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा कुटुम्ब के विषय में चिन्ताएँ बनी रहती हैं।

अनेक गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर भी वह ऋणी ही बना रहता है। आर्थिक चिन्ताओं से छुटकारा नहीं पाता।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : तृतीयभाव : राहु

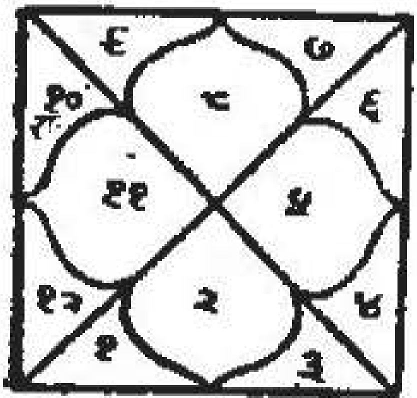

९६५

तीसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। उसे भाई-बहिनों का सुख भी खूब मिलता है, परन्तु उनके बारे में चिन्ताएँ भी बनी रहती हैं।

ऐसा व्यक्ति चतुर, हिम्मत वाला, धैर्यवान्, असाधारण साहसी तथा कठिन परिश्रमी होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : चतुर्थभाव : राहु

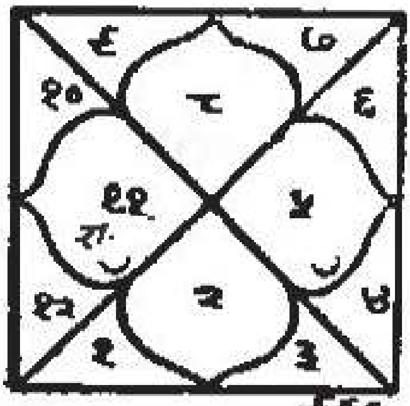

९६६

चौथे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी-बनी रहती है।

कभी-कभी पारिवारिक संकटों का सामना भी करना पड़ता है, जिनके निराकरण के लिए उसे गुप्त युक्तियों, हिम्मत तथा धैर्य का सहारा लेना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति होशियार तथा परिश्रमी भी होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : पंचमभाव : राहु

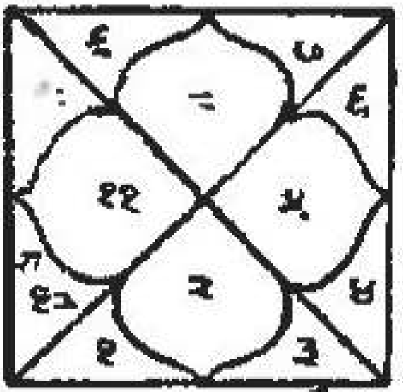

६६७

पाँचवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन तथा सन्तान के पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं, बाद में कुछ सफलता भी मिलती है।

ऐसा व्यक्ति चतुर, गुप्त युक्तियों में प्रवीण तथा हर समय चिन्तित रहने वाला होता है, परन्तु वह अपनी परेशानियों को किसी पर प्रकट नहीं करता।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : षष्ठभाव : राहु

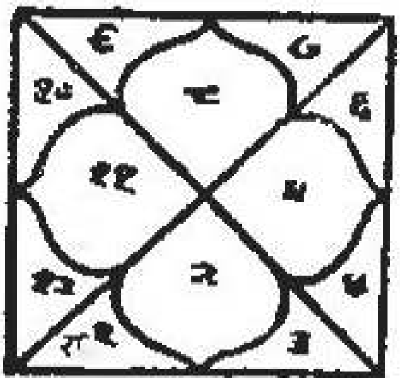

६६८

छठे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक शत्रुओं पर अत्यधिक प्रभाव रखता है तथा उन पर विजयी होता है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त चातुर्य, धैर्य, हिम्मत, कठिन परिश्रम तथा युक्तियों के बल पर हर प्रकार की कठिनाइयों पर विजय पाता रहता है तथा कभी भी हिम्मत नहीं हारता।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : सप्तमभाव : राहु

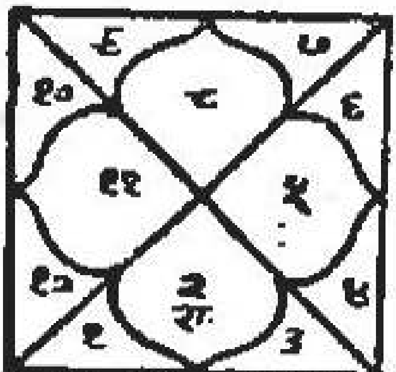

६६९

सातवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं। कभी-कभी स्त्री अथवा व्यवसाय के कारण घोर संकटों में भी फँस जाना पड़ता है, परन्तु वह अपनी हिम्मत, युक्ति, चतुराई एवं धैर्य के बल पर उन सब कठिनाइयों को पार कर जाता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : अष्टमभाव : राहु

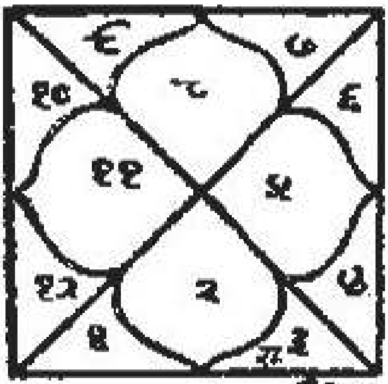

९६०

आठवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा आयु में वृद्धि होती है। उसका जीवन उमंग एवं उत्साह से भरा रहता है। वह बड़े ठाठ-बाट की जिंदगी बिताता है, परन्तु कभी-कभी उसे हानि भी उठानी पड़ती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा यशस्वी भी होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : नवमभाव : राहु

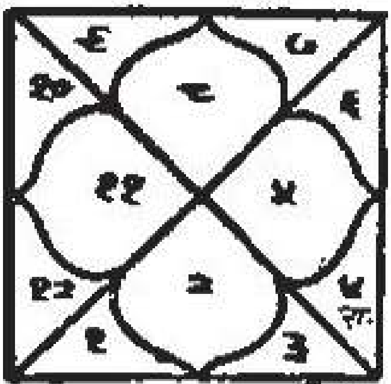

९६१

नवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को भाग्योन्नति में बहुत बाधाएँ आती हैं तथा धर्म के प्रति भी अश्रद्धा रहती है। वह मानसिक चिन्ताओं से ग्रस्त रहता है। कई बार निराश भी हो जाता है। अनेक प्रकार के कष्ट भोगने के बाद अन्त में उसे थोड़ी-बहुत सफलता मिलती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : दशमभाव : राहु

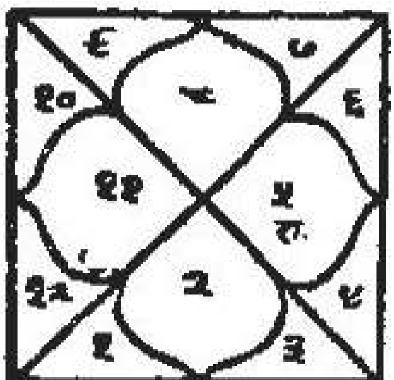

९६२

दसवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को अपने पिता द्वारा परेशानी रहती है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कष्ट उठाने पड़ते हैं। कभी-कभी वह अत्यधिक निराश भी हो जाता है। अन्त में धैर्य, साहस एवं चातुर्य के बल पर किसी प्रकार उन संकटों पर विजय पाकर थोड़ी-बहुत उन्नति कर लेता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : एकादशभाव : राहु

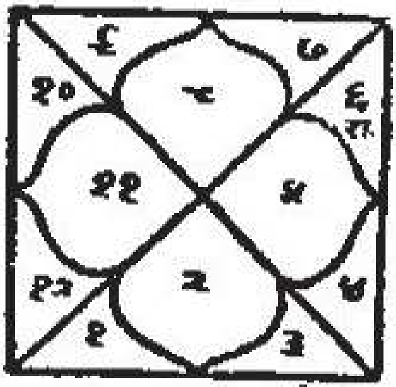

६७३

ग्यारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में खूब सफलता मिलती है। वह अधिक मुनाफा कमाने के लिए उचित-अनुचित का विचार भी नहीं करता।

ऐसा व्यक्ति धीर स्वार्थी तथा चतुर होता है। कभी-कभी उसे आकस्मिक धन-लाभ होता है, तो कभी अचानक ही भारी घाटा भी चला जाता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : द्वादशभाव : राहु

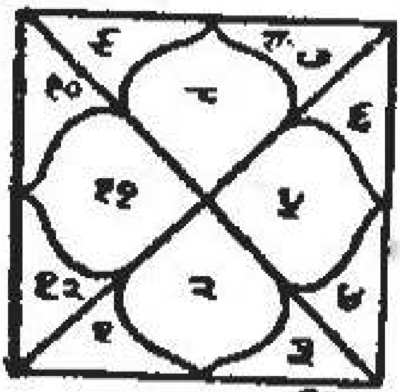

६७४

बारहवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण उसे परेशानियां रहती हैं। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उसे कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ भी होता है। कभी आकस्मिक धन-लाभ तो कभी आकस्मिक धन-हानि के अवसर भी उपस्थित होते हैं। अन्य प्रकार के कष्ट भी उठाने पड़ते हैं।

'वृश्चिक' लग्न में 'केतु'

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : प्रथमभाव : केतु

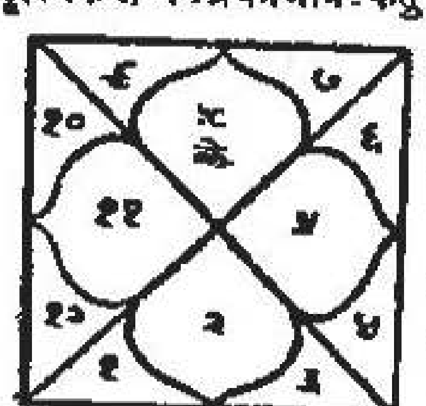

६७५

पहले भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के शरीर में कई बार चोट लगती है तथा शारीरिक सौन्दर्य में कमी आ जाती है।

ऐसा व्यक्ति स्वभाव का उग्र, दिमाग का कमजोर तथा कठिन शारीरिक श्रम करने वाला होता है। उसके शरीर पर चोट आदि का कोई स्थायी चिन्ह भी बनता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : द्वितीयभाव : केतु

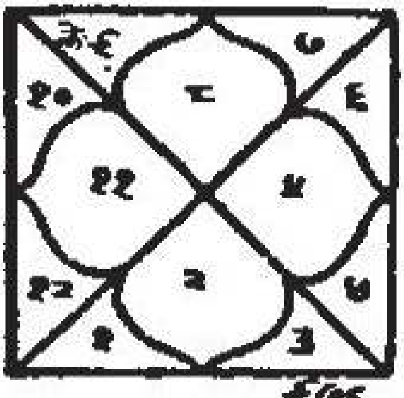

६७६

दूसरे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक धन-प्राप्ति के लिए प्रयत्न करता है। कभी-कभी आकस्मिक रूप से भी धन-लाभ हो जाता है। कौटुम्बिक सुख में कुछ कमी बनी रहती है।

ऐसा व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए सदैव सतर्क बना रहता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : तृतीयभाव : केतु

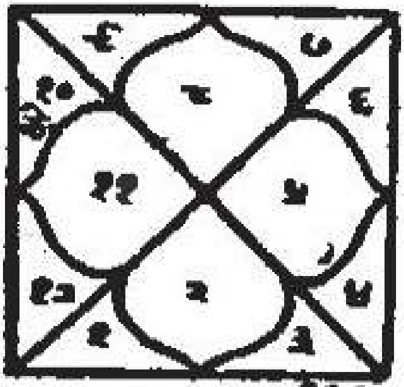

६७७

तीसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। भाई-बहिनों के संबंध के कष्ट का अनुभव होता है।

झगड़े-झंझटों में उसे सफलता प्राप्त होती है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी, परिश्रमी, धैर्यवान् तथा हिम्मती होता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : चतुर्थभाव : केतु

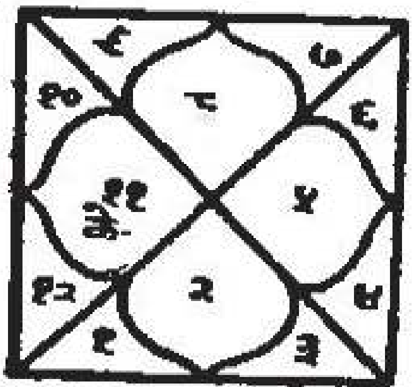

६७८

चौथे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को अपनी माता के कारण परेशानी उठानी पड़ती है। भूमि तथा भवन के सुख में भी कमी रहती है। चित्त सदैव अशान्त रहता है।

कठिन परिश्रम के बाद उसे कुछ चैन मिलता है। स्थान बदल देने अर्थात् परदेश में रहने से कुछ सुख मिलता है। घर में उसे सदैव अशान्ति ही बनी रहती है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : पंचमभाव : केतु

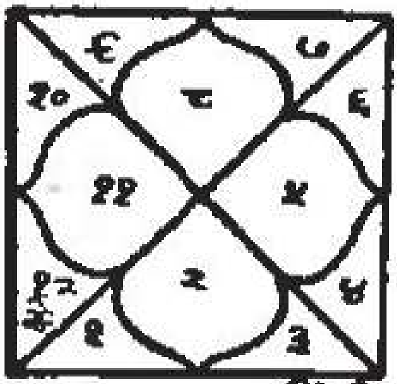

६७९

पाँचवें भाव में शत्रु 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन में कठिनाइयाँ आती हैं तथा सन्तान-पक्ष से भी कष्ट मिलता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी, दृढ़-निश्चयी, गुप्त युक्तियों से काम लेने वाला, धैर्यवान् तथा निडर होता है। वह अपनी गुप्त चिन्ताओं को किसी पर प्रकट नहीं होने देता।.

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : षष्ठभाव : केतु

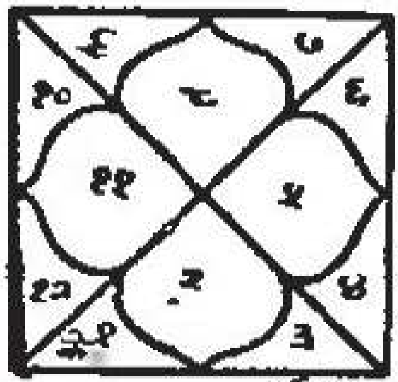

६८०

छठे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अपना विशेष प्रभाव रखता है। वह झगड़ों, कठिनाइयों आदि पर अपने साहस, गुप्त युक्ति, धैर्य, परिश्रम एवं बहादुरी के बल पर विजय पाता है। उसका ननसाल-पक्ष कमजोर रहता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : सप्तमभाव : केतु

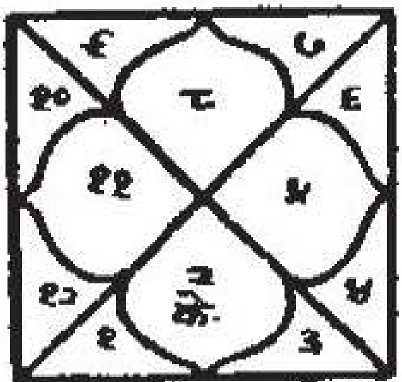

६८१

सातवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से घोर कष्ट मिलता है। गृहस्थ जीवन में अनेक संकट उठ खड़े होते हैं, दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी बड़ी कठिनाइयाँ आती हैं।

ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त युक्तियों, धैर्य साहस आदि के बल पर संकटों का कुछ निवारण कर पाने में समर्थ हो जाता है।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : अष्टमभाव : केतु

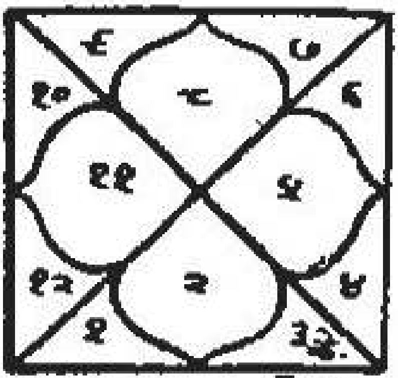

६८२

आठवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित नीच के 'केतु' के प्रभाव से जातक को अपने जीवन में अनेक बार मृत्यु-तुल्य कष्टों का सामना करना होता है। पुरातत्त्व की भी हानि होती है।

ऐसा व्यक्ति जीवन-निर्वाह के लिए कठिन परिश्रम करता है तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है परन्तु संकटों से मुक्ति नहीं मिल पाती।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : नवमभाव : केतु

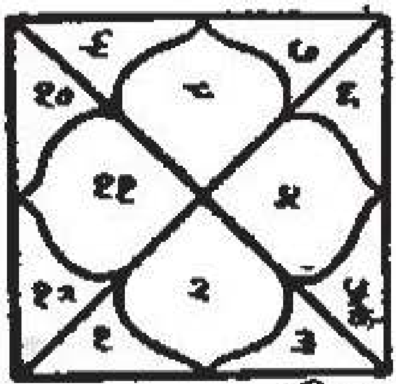

६८३

नवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में बड़े संकट आते हैं तथा धर्म की हानि होती है।

ऐसा व्यक्ति हर समय चिन्ताओं से घिरा रहता है। कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करता है। गुप्त युक्तियों एवं कठिन परिश्रम के बल पर भाग्य को बनाने की चेष्टा करते रहने पर भी सफलता नहीं मिल पाती।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : दशमभाव : केतु

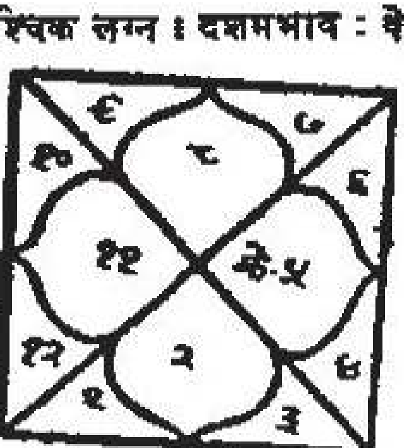

६८४

दसवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को अपने पिता द्वारा कष्ट प्राप्त होता है। राज्य के क्षेत्र में मान-भंग होता है तथा व्यवसाय-क्षेत्र में घोर संकट आते रहते हैं। यद्यपि वह धैर्य, हिम्मत एवं गुप्त युक्तियों के आश्रय से अन्ततः थोड़ी-बहुत राहत भी प्राप्त कर लेता है, परन्तु उसका जीवन सुख से नहीं बीतता।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : एकादशभाव : केतु

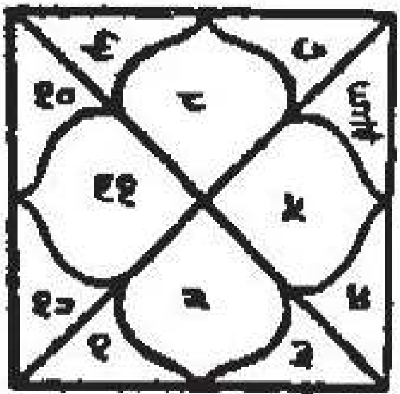

६८५

ग्यारहवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है। कभी-कभी आकस्मिक धन का लाभ होता है तो कभी-कभी संकट भी आते हैं।

ऐसा व्यक्ति चालाक, स्वार्थी, धूर्त तथा मतलबी होता है। उसे अपनी आमदनी से कभी सन्तोष नहीं होता।

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृश्चिक लग्न : द्वादशभाव : केतु

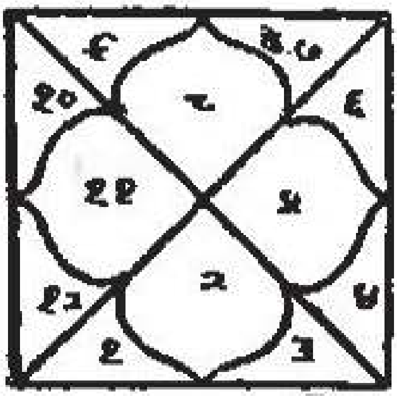

६८६

बारहवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ भी मिलता है।

वह गुप्त युक्ति, चातुर्य तथा परिश्रम के बल पर अपने खर्च को चलाता है, परन्तु कभी-कभी उसे घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है। फिर भी वह अपने धैर्य को कभी नहीं छोड़ता।